आराधना प्रसाद

फ़लक पे बादल मचा के हलचल फ़िज़ा को भरमा के रह गए हैं
गरज गरज के बरसते कैसे, शबाब पे आके रह गये हैं

हमारी आदत तुम्हारे जैसी ,तुम्हारी आदत हमारे जैसी
नहीं सुकूं है कहीं भी हमको,जहां से उकता के रह गये हैं

सफ़र में उजलत बहुत थी हमको, लगा कि मंज़िल क़रीब है अब
जो ज़ख्म खाए हैं ठोकरों से,ज़मीं से टकरा के रह गये हैं

भला तबीयत खराब करके, तुम्हीं बताओ कि क्या मिलेगा
किसी को परवाह नहीं किसी की, तुम्हें ये समझा के रह गए हैं

फ़ुजूल ख़र्ची, फ़ुजूल गोई हमें ये जबरन न मार डाले,
उलझ गए हैं जहां में ऐसे कि ख़ुद से घबरा के रह गये हैं

मुझसे जब वो ख़फा हो गया,
ख़ुद से भी फ़ासला हो गया

मुझको मंज़िल मिली ही नहीं
रास्ता फिर जुदा हो गया

फिर कबूतर की उजरत कटी,
कोई ख़त लापता हो गया

कैसा जादूई एहसास है
लम्स बादे सबा हो गया

ज़िंदगी फूल सी खिल गई,
साथ जब हमनवा हो गया।

ISSN:2583-8849